unicef

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004

कार्यकारी सारांश

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004 में लड़कियों की शिक्षा को आज विकास समुदाय के सामने मौजूद एक सबसे निर्णायक मुद्दा मानकर उसपर ध्यान केन्द्रित किया गया है। लड़कियों को इसलिए लक्ष्य किया गया है क्योंकि आमतौर पर वे ही पीछे छूट जाती हैं, क्योंकि जो कुछ उनके लिए लाभकारी है, उसका लाभ लड़कों को भी मिलेगा (जबकि इसका विपरीत हमेशा सच नहीं होता), क्योंकि अशिक्षित छूट जाने पर वे शारीरिक और यौन दुरूपयोग तथा अन्य प्रकार के शोषण की अधिक आसानी से शिकार हो सकती हैं। यह रिपोर्ट लड़के और लड़कियों के बीच मौजूदा विसंगति और स्कूलों से बाहर छूट जाने पर लड़कियों, उनके परिवारों, समुदायों और देशों को हो रहे नुकसान की गवाह है। इस रिपोर्ट में उन तमाम रणनीतियों, कार्यक्रमों और प्रयासों की जानकारी का भण्डार है, जिन्हें युनिसेफ और उनके साझीदारों ने लड़कियों की शिक्षा की दिशा में प्रगति और उसके परिणामस्वरूप सभी बच्चों के जीवन में सुधार के लिए विकसित किया है। अंततः इस रिपोर्ट में कहा गया है कि अब कुछ करने का वक्त आ गया है।

सहस्राब्दी विकास लक्ष्य

सितम्बर 2000 में संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी शिखर सम्मेलन के दौरान दुनिया के नेता निपट गरीबी और उसके विनाशकारी प्रभावों का मुकाबला करने के लिए ऐसे समयबद्ध सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों पर सहमत हुए थे, जिनकी दिशा में प्रगति को मापा जा सकता है। वैसे तो इनमें से प्रत्येक लक्ष्य विकास के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन दो लक्ष्यों – सबके लिए शिक्षा और लड़के–लड़कियों के बीच समानता तथा महिला अधिकारिता – को अन्य सभी लक्ष्यों की दिशा में प्रगति के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। शिक्षा के दम पर ही अगली पीढ़ी को गरीबी से लड़ने और बीमारी पर विजय पाने के हथियार मिलेंगे और शिक्षा के क्षेत्र में समानता से ही ऐसा भविष्य सुनिश्चित होगा, जिसमें लड़कियां और लड़के समान रूप से सुरक्षित, स्वस्थ, संरक्षित और सशक्त होंगे। यह कोई परमार्थ का काम नहीं है बल्कि एक नैतिक दायित्व है।

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004 में तर्क दिया गया है कि शिक्षा के मामले में लड़कियों और लड़कों के बीच समानता की बुनियाद के बिना अन्य लक्ष्यों की दिशा में प्रगति टिकाऊ नहीं हो सकती। वास्तव में प्राइमरी और माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर लड़कियों और लड़कों के बीच समानता को इतना महत्वपूर्ण माना गया है कि इस लक्ष्य को पाने की समय सीमा, अन्य लक्ष्यों से 10 वर्ष पहले यानी, सन् 2005 रखी गई है।

दुनियाभर के देशों में हजारों सफल परियोजनाओं के बावजूद शिक्षा के मामले में लड़कियों और लड़कों के बीच समानता का लक्ष्य अभी सपना ही है। *दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004* में आज भी स्कूल न जा रहे 12.1 करोड़ बच्चों की दुर्दशा उजागर की गई है, जिनमें से 6.5 करोड़ लड़कियां हैं।

लड़कियों को वंचित रखने की कीमत

इस रिपोर्ट में लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखने की कीमत और दुष्परिणामों के बारे में विभिन्न अध्ययनों के नतीजे पेश किए गए हैं। प्रमुख नतीजों से संकेत मिलता है कि लड़कियां विशेष तौर पर गरीबी और भुखमरी के सामने कमजोर साबित होती हैं; लड़कों की तुलना में उनके लिए एचआईवी/एड्स, यौन शोषण और बाल तस्करी का खतरा अधिक रहता है। एक लड़की को स्कूल में मिल सकने वाली जानकारी और जीवन उपयोगी दक्षता से वंचित रखने के तात्कालिक और दीर्घकालिक प्रभाव होते हैं। उसके सामने शिक्षित लड़की की तुलना में खतरे कहीं अधिक होते हैं और वह इसके दुष्परिणाम अगली पीढ़ी को विरासत में सौंप देती है।

अध्ययनों से यह भी पता चला है कि शिक्षा लड़कियों में आत्मविश्वास, सामाजिक और बातचीत की दक्षता तथा पैसा कमाने की ताकत बढ़ाती है और उनकी हिंसा तथा बीमारी की शिकार होने की सम्भावना को कम करती है। लड़कियों की शिक्षा का मानव विकास

कार्यकारी सारांश

के अन्य पहलुओं से अटूट संबंध है। वास्तव में इसे प्राथमिकता बनाकर हम अन्य सभी क्षेत्रों में भी विकास को बढ़ावा दे रहे हैं।

आखिर यह सब जानते हुए भी दुनिया में लड़कियों को जानबूझकर स्कूलों से बाहर क्यों रखा जा रहा है, महिलाएं राजनीतिक प्रक्रिया के दायरे से बाहर क्यों हैं और देश क्यों पिछड़ रहे हैं जबकि विकास की गति कुछ स्थानों पर तेज़ और कुछ पर नदारद क्यों है ? *दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004* में इन तमाम सवालों के जो जवाब दिए गए हैं, वे परस्पर जुड़े हुए हैं। लड़कियों और लड़कों के बीच प्रचलित भेदभाव तथा शिक्षा को मानवाधिकार का दर्जा देने में विफलता तो इस लम्बी सूची की शुरूआत भर है।

इसका एक और पहलू गरीबी है। वैसे तो गरीब सामाजिक–आर्थिक समूहों के लड़के और लड़कियों, दोनों के लिए ही शिक्षा से वंचित रहने की आशंका अधिक रहती है, लेकिन लड़कियों पर गरीबी की मार अधिक पड़ती है। असल में वे दोहरी मार झेलती हैं: लड़की होने के कारण और अपनी गरीबी के कारण।

इस रिपोर्ट में लड़कियों की शिक्षा में निवेश के विविध लाभों का वर्णन भी किया गया है: आर्थिक विकास में तेज़ी; अगली पीढ़ी के लिए शिक्षा; कक्षा के दायरे से कहीं बाहर तक फैले शिक्षा के लाभ (बहु–गुणित प्रभाव); बाल मौतों में कमी; अधिक स्वस्थ परिवार; मातृ मौतों में कमी।

लड़कियों की शिक्षा और विकास समुदाय

इस रिपोर्ट में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि लड़कियों की शिक्षा अभी तक विकास के लिए निवेश के मामले में प्राथमिकता नहीं बन पाई है, हालाँकि इस बात के ठोस प्रमाण मिल चुके हैं कि मानव विकास से आर्थिक प्रगति को गति मिलती है, जबकि आर्थिक प्रगति से मानव विकास को गति मिलना आवश्यक नहीं है। अनेक अध्ययनों ने पुष्टि कर दी है कि लड़कियों की शिक्षा मानव विकास की गति बढ़ाने का सबसे प्रभावकारी साधन है। *दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004* में लड़कियों की शिक्षा के कुछ दीर्घकालिक लाभ बताए गए हैं, जिनपर ध्यान देना विशेष रूप से आवश्यक है:

स्कूलपूर्व शिक्षा कार्यक्रमों से लड़कियों को घरेलू कामकाज और आमदनी देने वाली गतिविधियों के दलदल में फँसने की बजाए स्कूल की पढ़ाई के लिए तैयार होने के लिए मदद मिलती है। समुदाय आधारित देखभाल से लड़कियां स्कूल में नियमित उपस्थिति की आवश्यकता से परिचित हो सकती हैं और उनके भावी जीवन तथा उनके बच्चों के जीवन के लिए अच्छी दिनचर्या की शुरूआत हो सकती है।

शिक्षित युवा एचआईवी/एड्स से अपना बचाव करने में अधिक समर्थ हो सकते हैं।

स्कूल में पढ़ रही लड़की के लिए घर से बाहर शोषक कामकाज में फँसने की आशंका कम रहती है और उसे घरेलू कामकाज के भारी बोझ से भी राहत मिलती है। पढ़ी–लिखी और जीवन उपयोगी दक्षताओं का प्रशिक्षण ले चुकी लड़कियों के परिवार के भीतर हिंसा, यौन दुरूपयोग और व्यापार के विकृत रूपों में उलझने की आशंका कम रहती है।

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004 का निष्कर्ष है कि कुछ क्षेत्र तो 2005 के सहस्राब्दी विकास लक्ष्य को हासिल करने के लिए सही रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन दुनिया के अन्य हिस्सों में लड़कियां अब भी

कुल प्राइमरी स्कूल भर्ती/उपस्थिति दरें (1996–2002)

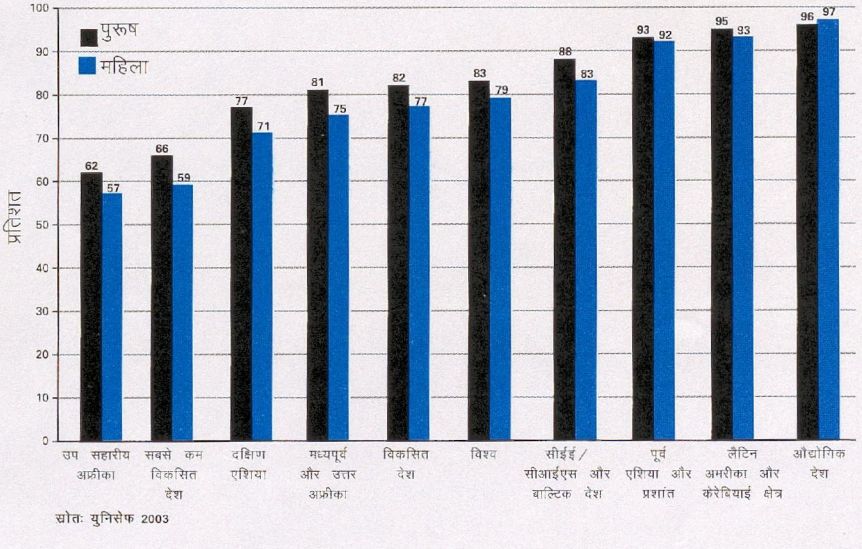

स्रोत: युनिसेफ 2003

कहीं पीछे छूट रही हैं। कुल प्राइमरी स्कूल भर्ती/उपस्थिति दरें इसका प्रमाण हैं। (देखें आरेख)

धन की व्यवस्था

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004 में बताया गया है कि कुछ अपवादों को छोड़कर, औद्योगिक देश और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएं अपने वायदों को पूरा करने के मामले में बहुत अधिक असफल रहीं हैं। 1990 में दाता देशों ने शिक्षा के लिए अतिरिक्त धन देने का वायदा किया था और 1996 में यह वचन दिया गया था कि सन् 2015 तक दुनिया के सभी बच्चों को प्राइमरी शिक्षा सुलभ हो जाएगी। इसके बावजूद विकासशील देशों के लिए मिलने वाली कुल सहायता 1990 के दशक के दौरान घटी है और शिक्षा के लिए द्विपक्षीय वित्तीय सहायता तो और भी कम हुई है।

लड़के

सभी बच्चों के लिए स्वस्थ और बराबरी पर आधारित भविष्य की अपनी कल्पना के अनुरूप *दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004* में शिक्षा पाने के लड़कों के अधिकार को भी बराबर महत्व दिया गया है। इसमें लैंगिक संवेदना का अर्थ यह बताया गया है: लड़कियों और लड़कों दोनों की आवश्यकताओं के प्रति सचेत रहना और ऐसी स्कूल व्यवस्था, कक्षा तथा समाज का निर्माण करना जिसमें सभी बच्चे अच्छी तरह पनप सकें।

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004 में साबित किया गया है कि शिक्षा को लड़कियों के लिए अधिक सुरक्षित, अधिक उपयोगी और अधिक अधिकार देने वाला साधन बनाने के लिए किए गए सुधारों ने लड़कों की भी मदद की है। बचपन के प्रारम्भ में देखभाल के समन्वित कार्यक्रमों, स्कूलों की लचीली दिनचर्या, पर्याप्त स्वच्छता सुविधाओं, लड़कों और लड़कियों की आवश्यकताओं के प्रति सचेत पढ़ाई और बच्चों के लिए हितैषी तथा हिंसा से मुक्त स्कूल के माहौल के विस्तार का लाभ सभी बच्चों को मिला है।

कदम उठाने का आह्वान

रिपोर्ट में निष्कर्ष निकाला गया है कि लड़कियों की शिक्षा एक आदर्श निवेश है। यह सामाजिक विकास के अन्य क्षेत्रों का महत्व बढ़ाती है, स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था पर बोझ कम करती है, गरीबी कम करती है और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करती है। इसकी लागत को वहन करना सम्भव है: अब से लेकर सन् 2015 तक दाता देशों को 60 अरब डॉलर की बाहरी सहायता देनी पड़ सकती है। इसके रास्ते की व्यावहारिक बाधाओं को भी पार किया जा सकता है: लड़कियों को स्कूल में भर्ती कराने और पढ़ाई जारी रखने के लिए समन्वित रणनीतियों की आवश्यकता है। *दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004* में प्रस्तुत प्रमाणों से सिद्ध होता है कि सबके लिए शिक्षा की चुनौती वास्तव में विकास के सभी क्षेत्रों: शिक्षा, वित्त, स्वास्थ्य, श्रम, न्याय और नियोजन की चुनौती है।

युनिसेफ समाज के हर स्तर के नेताओं से तत्काल आग्रह करता है कि वे अन्य बातों के अलावा लड़कियों की शिक्षा को विकास के प्रयासों का अभिन्न अंग बनाएं, सभी स्कूलों में फीस लेना बंद कराएं और शिक्षा नीतियों को गरीबी दूर करने की राष्ट्रीय योजनाओं में समाहित कराएं तथा स्कूलों को सामुदायिक विकास के केन्द्रों के रूप में स्थापित कराएं। संघर्षों और आपात स्थिति में फँसे बच्चों के लिए ऐसा करना विशेष रूप से आवश्यक है।

युनिसेफ शिक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय धन के प्रवाह में वृद्धि का आग्रह भी करता है। उसकी अपील है कि सरकारी सहायता का 10 प्रतिशत बुनियादी शिक्षा के लिए उपलब्ध कराया जाए। औद्योगिक देशों को अपने सकल राष्ट्रीय उत्पाद का कम से कम 0.7 प्रतिशत सहायता के रूप में देने और कम से कम 0.15 प्रतिशत सबसे कम विकसित देशों को देने का अपना वचन अवश्य पूरा करना चाहिए।

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004 में संलग्न परिशिष्ट में स्कूलों में लड़कियों की भर्ती बढ़ाने के लिए कक्षा के भीतर और बाहर अपनाई जाने वाली रणनीतियों के साथ-साथ विभिन्न देशों में सफल कार्यक्रमों के उदाहरण दिए गए हैं। इनमें से प्रत्येक कार्यक्रम अपने-अपने ढंग से बच्चों के लिए हितैषी और लड़कियों तथा लड़कों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील स्कूल का मॉडल पेश करता है।

unicef

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004

सर्वोत्तम उपाय

युनिसेफ और उसके साझीदार शिक्षा के मामले में लड़कों और लड़कियों के बीच समानता लाने और सभी बच्चों को प्राइमरी शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य हासिल करने की दिशा में काम कर रहे हैं। प्राइमरी स्कूलों में लड़कियों की भर्ती और पढ़ाई पूरी करने की दरें सुधारने के कार्यक्रम, लड़कों और लड़कियों, उनके परिवारों, समुदायों और राष्ट्रों के लिए लाभकारी सिद्ध हुए हैं। युनिसेफ के कार्यक्रमों और दृष्टिकोणों की व्यापकता और विविधता ने लचीलेपन और समुदाय की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता की आवश्यकता उजागर कर दी है। युनिसेफ अपने साझीदारों के साथ मिलकर अपने प्रयासों को उन लोगों की आवश्यकताओं और लक्ष्यों के अनुरूप ढाल रहा है, जिन्हें सेवाएं प्रदान की जानी हैं। लड़कियों की शिक्षा का स्तर सुधारने के कुछ सफल उपायों के उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं।

अफगानिस्तान – स्कूल लौटो अभियान ने 40 लाख बच्चों को स्कूल में भर्ती कराया है, जिनमें से 10 लाख लड़कियां हैं। अफगानिस्तान सरकार ने दो दशक की लड़ाई में तहस–नहस हो चुकी स्कूल व्यवस्था को फिर से अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए स्थानीय समुदायों, गैर–सरकारी संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ मिलकर काम किया है। युनिसेफ की मदद से सन् 2001 में शुरू हुए स्कूल लौटो अभियान ने सैकड़ों स्कूलों की इमारतों की मरम्मत, सुरक्षित जल और स्वच्छता सुविधाओं की व्यवस्था, और अस्थाई कक्षाओं के रूप में इस्तेमाल के लिए 8500 से अधिक टैंटों की आपूर्ति में मदद की है।

बंगलादेश – बीआरएसी मॉडल का इस्तेमाल करते हुए सबसे वंचित समूहों के लिए निर्धारित स्कूल सप्ताह में छः दिन, हर रोज़ दो घंटे, चलाए जाते हैं और इनमें वे बच्चे पढ़ने आ रहे हैं, जिनके लिए बुनियादी शिक्षा पाने का कोई मौका ही नहीं था। अब कुल मिलाकर करीब 12 लाख बच्चे इन स्कूलों में भर्ती हो चुके हैं, जिनमें से अधिकांश लड़कियां हैं और बड़ी संख्या में शिक्षिकाओं की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम को सफलता प्रदान की है।

भूटान – स्कूलों की खास इमारतों की बजाय झोंपड़ियों, मंदिरों या खेतों में करीब 261 सामुदायिक स्कूल खोले गए हैं और उनका प्रबंध तथा निगरानी माता–पिता एवं स्थानीय समुदाय के हाथ में है। शिक्षा विभाग ने लड़कों और लड़कियों के बीच प्राइमरी स्कूल भर्ती अनुपात में अंतर को 1990 में 24 प्रतिशत से घटाकर सन् 2000 में छः प्रतिशत तक लाने में सफलता हासिल की है। लड़के और लड़कियों दोनों के लिए ही पढ़ाई बीच में छोड़ देने वाले बच्चों की दर में भी उल्लेखनीय कमी आई है। यह 1995 में आठ प्रतिशत से घटते–घटते 1999 में चार प्रतिशत रह गई।

बोलीविया – युनिसेफ ने द्विभाषी अंतर–सांस्कृतिक शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से 13,500 शिक्षकों के प्रशिक्षण में मदद दी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के रूप में अपनाए गए इस कार्यक्रम को अब देश की शिक्षा व्यवस्था में पूरी तरह समाहित कर दिया गया है। युनिसेफ ने प्रयोग के तौर पर राष्ट्रीय साक्षरता और उत्पादन योजना तैयार कराई है। देशभर में 2,400 से अधिक साक्षरता केन्द्र 1,20,000 लोगों को लाभ पहुँचा रहे हैं।

ब्राज़ील – शिक्षा को बढ़ावा देने और बाल मजदूरी समाप्त करने के लिए शुरू किया गया बोलसा एस्कोला अभियान इतना सफल रहा है कि इसे न सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर अपनाया गया, बल्कि समूचे उपसहारीय अफ्रीका में अपनाया जा रहा है। जो गरीब परिवार अपने 7 से 14 वर्ष के बच्चों को स्कूल में रखने और कम से कम 90 प्रतिशत उपस्थिति दर्ज कराने पर सहमत हो जाते हैं, उन्हें न्यूनतम मासिक वेतन दिया जाता है।

इक्वेडोर – आर्थिक संकट के दौर में जब देश के 20 प्रतिशत सबसे गरीब परिवारों ने अपने बच्चों का स्कूल छुड़ा दिया था, तब शुरू की गई बेका एस्कोलर योजना में छात्रवृत्ति के मामले में लड़कियों को प्राथमिकता दी जाती है। सन् 2002 में बेका एस्कोलर योजना से 1,05,000 बच्चों को लाभ हुआ और सन् 2003 में 3,00,000 बच्चों को इसके दायरे में लाया जा रहा है।

unicef

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004
सर्वोत्तम उपाय

मिस्र – मिस्र में राष्ट्रपति की पत्नी माननीया सूज़ान मुबारक की अध्यक्षता में हुई अनेक उच्चस्तरीय बैठकों के बाद बालिका शिक्षा को अगले पाँच वर्ष तक विकास की पहली प्राथमिकता तय किया गया और यह संकल्प लिया गया कि स्कूल न जा रही 5,00,000 से अधिक लड़कियों तक पहुँचकर लड़कियों और लड़कों के बीच अंतर को सन् 2007 तक समाप्त कर दिया जाए। एक दर्जन से अधिक सरकारी मंत्रालयों को गैर–सरकारी संगठनों और संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों के साथ जोड़कर एक राष्ट्रीय कार्यबल का गठन किया गया है, जिसका लक्ष्य सन् 2003 में लड़कियों के लिए अनुकूल 3,000 स्कूल खोलना है।

भारत – भारत सरकार ने सभी बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा देने के लिए सन् 2001 में सर्व शिक्षा अभियान की नीतिगत घोषणा की। इसका उद्देश्य अच्छे किस्म की समुदाय आधारित शिक्षा प्रदान करना है। इस नीति में स्वीकार किया गया है कि शिक्षा को उपयोगी तथा सार्थक बनाया जाना चाहिए। इसके लिए पाठ्यक्रम में सुधार करना, बाल केन्द्रित गतिविधियों पर ध्यान देना, शिक्षकों के प्रशिक्षण में निवेश करना और पढ़ाई के लिए प्रभावकारी और अभिनव उपकरणों तथा नीतियों का विकास करना आवश्यक है। इस कार्यक्रम में लड़कियों सहित समाज के कमजोर और आर्थिक दृष्टि से हाशिए पर जी रहे समूहों के बच्चों पर ध्यान दिया गया है। स्कूलों के प्रबंध में समुदाय की सक्रिय भागीदारी इसकी विशेषता है। इसमें सभी लड़कियों और अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के बच्चों को आठवीं कक्षा तक पाठ्य पुस्तकें मुफ्त उपलब्ध कराने की व्यवस्था है।

केन्या – स्कूल की फीस समाप्त करने की नई नीति लागू होते ही सन् 2003 में 13,00,000 से अधिक बच्चों ने स्कूलों में पहली बार कदम रखा। राष्ट्रीय स्तर पर प्राइमरी स्कूल भर्ती 59,00,000 से बढ़कर 72,00,000 हो गई। वंचित वर्गों के बच्चों को स्कूल में लाने में मदद करने के लिए पाठ्य पुस्तकें और पढ़ाई की अन्य आवश्यक वस्तुएं प्रदान की गईं।

मोरक्को – आर्थिक प्रावधान और नियोजन मंत्रालय के सन् 2001 के एक सर्वेक्षण के अनुसार ग्रैंड कासाब्लांका क्षेत्र में करीब 23,000 लड़कियां नौकरानी के रूप में काम कर रही हैं और इनमें से करीब 60 प्रतिशत की उम्र 15 वर्ष से कम है। युनिसेफ ने सन् 2001 से स्थानीय गैर–सरकारी संगठनों की साझीदारी और विलाया ऑफ कासाब्लांका के समर्थन से इन लड़कियों को शिक्षा तथा बुनियादी स्वास्थ्य सुविधा दिलाने में मदद की है।

म्यामां – दूसरी से नवीं कक्षा तक के बच्चों को सामान्य पाठ्यक्रम के अंतर्गत स्कूल आधारित स्वस्थ रहन–सहन और एचआईवी/एड्स रोकथाम शिक्षण कार्यक्रम के ज़रिए शिक्षा दी जा रही है। इसमें एचआईवी/एड्स, व्यक्तिगत स्वच्छता, पोषण और नशीले पदार्थों जैसे स्वास्थ्य से जुड़े और अन्य सामाजिक मुद्दों पर जीवन रक्षक दक्षताएं विकसित करने वाली गतिविधियों के माध्यम से ध्यान दिया जा रहा है। 1998 में शुरू किया गया यह कार्यक्रम अब करीब 9,000 स्कूलों में 13,00,000 बच्चों को शिक्षित कर रहा है। सरकार समूचे म्यामां में जीवन उपयोगी शिक्षण के लिए मानक के रूप में इसे अपना रही है।

तुर्की – स्थानीय शिक्षण केन्द्रों की सफलता को देखते हुए तुर्की के शिक्षा मंत्रालय ने खुली प्राइमरी स्कूल व्यवस्था को अपनी बालिका शिक्षा नीति के लिए आदर्श के रूप में अपना लिया है। घरों में उलझी हुई लड़कियों को स्कूल में भर्ती कराने के लिए स्थापित खुली प्राइमरी स्कूल व्यवस्था का उद्देश्य उन लड़कियों को पढ़ाई का मौका देना है जो अपनी अनिवार्य प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाई हैं। इससे लड़कियों को अपने परिवारों के भीतर घरेलू कामकाज के बोझ से भी मुक्ति मिलती है।

संयुक्त तन्जानिया गणराज्य – तन्जानिया में पूरक बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम स्कूल की उम्र से बड़े उन करीब 30,00,000 बच्चों और किशोरों को पढ़ाई की सुविधा प्रदान कर रहा है, जो स्कूल नहीं जाते। इसमें विशेष रूप से तैयार किए गए तीन वर्षीय पाठ्यक्रम के माध्यम से इन बच्चों को बुनियादी शिक्षा दी जा रही है। इसको पूरा करने के बाद बच्चे मुख्य स्कूल व्यवस्था में प्रवेश ले सकते हैं। औपचारिक शिक्षा व्यवस्था में यह परियोजना इसलिए शामिल की गई कि उन बच्चों और किशोरों को पढ़ने का अवसर दिया जा सके, जो स्कूल में भर्ती की आयु तय करने के नए नियमों के कारण स्कूल में प्रवेश पाने योग्य नहीं रह गए हैं।

ज़ाम्बिया – 1995 में देश के 20 स्कूलों में बालिका शिक्षा उन्नति कार्यक्रम अपनाया गया था। सन् 2002 तक इसे सभी 72 ज़िलों में 1000 से अधिक स्कूलों में लागू कर दिया गया। 12 सक्रिय हस्तक्षेपों के माध्यम से यह कार्यक्रम नारी के आदर्श रूपों को प्रोत्साहन देता है, कक्षा में पढ़ाई की प्रभावशीलता बढ़ाता है, और अधिक संख्या में लड़कियों के लिए अच्छे किस्म की शिक्षा सुलभ कराता है।

unicef

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004

धन के प्रवाह में कमी

आर्थिक सहयोग और विकास संगठन के सदस्य देशों ने वायदा किया था कि वे अपनी सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) का 0.7 प्रतिशत हिस्सा विकासशील देशों को सरकारी विकास सहायता (ओडीए) के रूप में देंगे। इसके साथ ही यह वायदा भी किया गया था कि वे अपनी सकल राष्ट्रीय आय का 0.15 से 0.20 प्रतिशत हिस्सा सबसे कम विकसित देशों को सहायता के रूप में देंगे।

सन् 2002 में, जी–7 देशों की सकल राष्ट्रीय आय के प्रतिशत के रूप में कुल सरकारी विकास सहायता

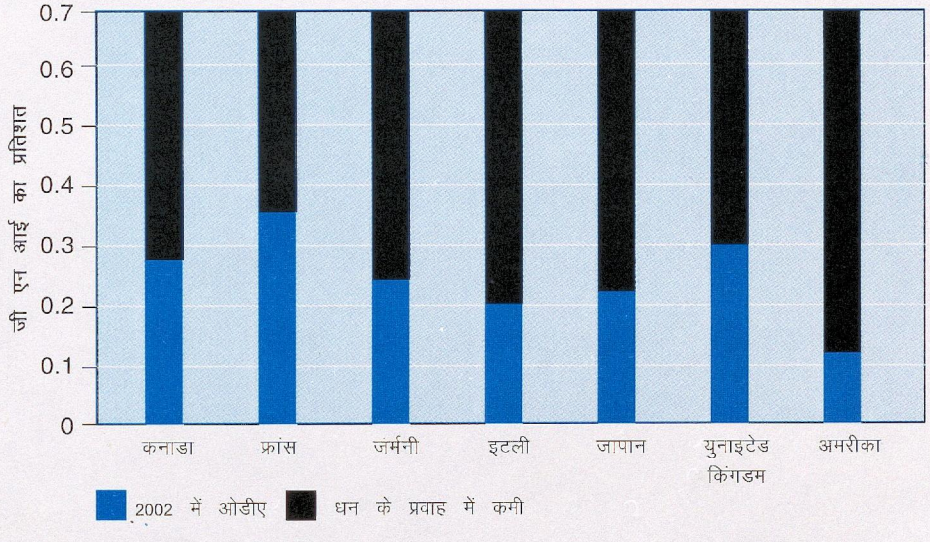

सन् 2001 में, जी–7 देशों की सकल राष्ट्रीय आय के प्रतिशत के रूप में सबसे कम विकसित देशों के लिए कुल सरकारी विकास सहायता

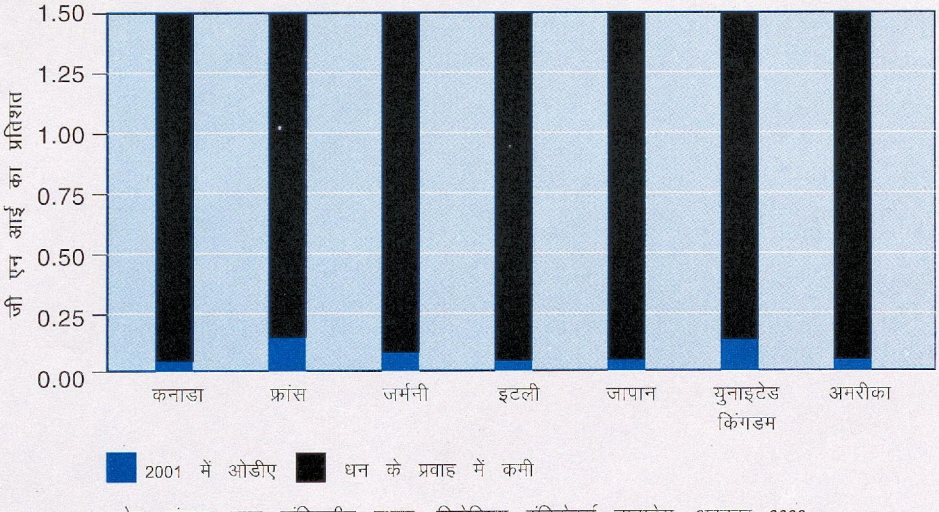

स्रोतः संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकीय प्रभाग, मिलेनियम इंडिकेटर्स डाटाबेस, अक्तूबर 2003

unicef

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004

प्रेस सारांश

युनिसेफ ने, प्राइमरी और माध्यमिक शिक्षा के मामले में लड़कियों और लड़कों के बीच अंतर समाप्त करने के प्रयासों की गति बढ़ाने के लिए करीब एक वर्ष पहले '2005 तक 25 बालिका शिक्षा अभियान' की शुरूआत की थी। 'इस अभियान में उन देशों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, जहाँ लड़कियों की शिक्षा के सामने बड़ी चुनौतियां हैं और जहाँ सन् 2005 तक इस मामले में लड़कियों और लड़कों के बीच समानता का सहस्राब्दी विकास लक्ष्य पाने के लिए बहुत अधिक सहायता की आवश्यकता होगी।

युनिसेफ की कार्यकारी निदेशक कैरल बैलमी ने अपनी रिपोर्ट, *दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004* में विकास के लिए मानवाधिकारों पर आधारित ऐसा विविध–क्षेत्रीय दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया है, जो लड़कियों को शिक्षा प्रदान करे, सभी बच्चों को शिक्षित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के वायदे पूरे करे, परिवारों और राष्ट्रों के लिए समान रूप से अधिकतम लाभ प्रदान करे और विश्व के अन्य अनेक प्रमुख विकास लक्ष्यों को हासिल करने में मदद करे।

इस रिपोर्ट में उठाए गए प्रमुख मुद्दों का सारांश यहाँ दिया जा रहा है।

मुद्दा 1: सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों में से सबसे आवश्यक लक्ष्य

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004, में लड़कियों की शिक्षा को आज अंतर्राष्ट्रीय विकास समुदाय के सामने मौजूद एक सबसे निर्णायक मुद्दा बताया गया है। रिपोर्ट में आज दुनियाभर में स्कूल न जा रहे 12.1 करोड़ बच्चों की ओर से कार्रवाई का आह्वान किया गया है, जिनमें से 6.5 करोड़ लड़कियां हैं। इसमें स्कूल न जा पाने के कारण खुद लड़कियों और उनके परिवारों, समुदायों तथा देशों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

दुनिया के नेताओं ने सन् 2015 तक हासिल करने के लिए कुछ सहस्राब्दी विकास लक्ष्य तय किए थेः निपट गरीबी और भूख का नामोनिशान मिटाना, सब बच्चों को प्राइमरी शिक्षा देना, लड़की और लड़के के बीच समानता को प्रोत्साहन देना एवं महिलाओं को सशक्त बनाना, बाल मृत्यु में कमी लाना, माताओं का स्वास्थ्य सुधारना, एचआईवी/एड्स, मलेरिया और अन्य बीमारियों का सामना करना, पर्यावरण की रक्षा करना और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय साझीदारी जुटाना। सन् 2015 तक के लिए निर्धारित इन लक्ष्यों में से दो को अन्य लक्ष्य हासिल करने के लिए निर्णायक माना गया हैः सब बच्चों के लिए शिक्षा, और लड़के–लड़की के बीच समानता तथा महिला अधिकारिता। सब बच्चों के लिए शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ने के लिए यह आवश्यक माना गया है कि प्राइमरी और माध्यमिक शिक्षा में लड़कों और लड़कियों के बीच समानता का लक्ष्य अन्य लक्ष्यों से 10 वर्ष पहले यानी सन् 2005 तक ही हासिल कर लिया जाए। 2005 तक हासिल किया जाने वाला यह लक्ष्य न सिर्फ अपने आप में एक लक्ष्य है, बल्कि विकास की व्यापक कार्यसूची का एक प्रमुख अंग होने के साथ–साथ गरीबी का शिकंजा तोड़ने के लिए दुनिया की प्रतिबद्धता की पहली कसौटी भी है।

इन्हीं सब कारणों से लड़कियों की शिक्षा को सबसे आवश्यक और तात्कालिक लक्ष्य बताया गया है।

(देखें अध्याय 1, विकास की शुरूआत)

मुद्दा 2: लड़के और लड़कियों के बीच भेदभाव

शिक्षा के मामले में लड़के और लड़कियों के बीच बराबरी के अंतर्राष्ट्रीय संकल्प पूरे क्यों नहीं हो पाए, यह समझाने की कोशिश में *दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004* में दलील दी गई है कि विकास के सिद्धांत, नीतियां और उपाय लैंगिक भेदभाव के शिकार हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि

सबके लिए शिक्षा को मानवाधिकार मानने की बजाए विशेष सुविधा माना गया है, आर्थिक विकास कार्यक्रमों ने मानव कल्याण की बजाए आर्थिक प्रदर्शन पर ध्यान केन्द्रित किया है और समाधानों की तलाश करते समय सीमित नीतियों ने सिर्फ शिक्षा क्षेत्र को निशाना बनाया है।

यह सच है कि एक भी बच्चे को शिक्षा से वंचित रखना विनाशकारी है, किन्तु एक भी लड़की को शिक्षा से वंचित रखने की और भी भारी कीमत चुकानी पड़ती है और यह कीमत अकेले उस लड़की को ही नहीं बल्कि उसके परिवार, उसके समाज, और उसके देश को भी चुकानी पड़ेगी। लड़कियों के सामने एचआईवी/एड्स, यौन शोषण और बाल तस्करी का खतरा लड़कों की तुलना में कहीं अधिक होता है। लड़कियां, विशेष रूप से गरीबी और भुखमरी की अधिक आसानी से शिकार होती हैं। लड़कियों को जब स्कूलों में मिलने वाली जानकारी और जीवन के लिए उपयोगी दक्षता से वंचित रखा जाता है तो यह खतरे न सिर्फ थोड़े समय के लिए बढ़ते हैं बल्कि इन्हें अगली पीढ़ी को विरासत में भी सौंप दिया जाता है।

इसके विपरीत शिक्षा एक बालिका को;

- सीखने का अवसर और अपनी क्षमता का अधिक अहसास प्रदान करती है
- उसका आत्मविश्वास, कमाने की ताकत और सामाजिक तथा अपने हित में बातचीत की अधिक क्षमता प्रदान करती है
- हिंसा और बीमारी से अपनी रक्षा करने की अधिक क्षमता देती है।

(देखें अध्याय 1, विकास की शुरूआत)

मुद्दा 3: विकास के लिए मानवाधिकार आधारित, विविध–क्षेत्रीय दृष्टिकोण

विकास के लिए निवेश के मामले में लड़कियों की शिक्षा को कभी भी प्राथमिकता नहीं माना गया। सदियों से यही माना जाता रहा है कि आर्थिक विस्तार के साथ–साथ सामाजिक लाभ अपने–आप मिल जाएंगे, किन्तु विकासशील देशों में वर्षों के असफल अनुभवों ने इस विचारधारा की अपर्याप्तता सिद्ध कर दी है। इस बात के कोई स्थाई प्रमाण नहीं मिले हैं कि अकेले आर्थिक वृद्धि के दम पर गरीबी और असमानता को कम किया जा सकता है।

वास्तव में सच इसके विपरीत प्रतीत होता है: मानव विकास से आर्थिक प्रगति को बढ़ावा मिलता है। युनिसेफ के एक अध्ययन के अनुसार, 1990 के दशक में अधिकतम औसत वार्षिक वृद्धि उन्हीं देशों में हासिल की जा सकी, जिन्होंने 1980 में सशक्त मानव विकास संकेतकों के साथ शुरूआत की थी। अब इस सच्चाई को व्यापक रूप से समझा जा रहा है कि विकास के अर्थशास्त्र में लैंगिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है और महिलाओं को सशक्त बनाए बिना गरीबी में टिकाऊ तरीके से कमी ला पाना सम्भव नहीं है।

लड़कियों की शिक्षा का मानव विकास के अन्य पहलुओं के साथ इतना जटिल और अटूट संबंध है कि इसे प्राथमिकता मान लेने से विविध प्रकार के अन्य मोर्चों पर भी प्रगति की जा सकती है:

- महिलाओं का स्वास्थ्य और हैसियत
- बचपन के प्रारम्भ में देखभाल
- पोषण, जल और स्वच्छता
- बाल मजदूरी और अन्य प्रकार के शोषण में कमी
- संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान।

(देखें अध्याय 1, विकास की शुरूआत और अध्याय 2, शिक्षित बालिकाएं, विकास के लिए अनूठी रचनात्मक शक्ति)

मुद्दा 4: बालिका शिक्षा में निवेश के विविध लाभ

- **बेहतर आर्थिक विकास।** बालिकाओं के लिए प्राथमिक स्कूल भर्ती दर बढ़ने के साथ–साथ प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद भी बढ़ता जाता है। शिक्षा के मामले में जो देश लड़के और लड़कियों के बीच समानता हासिल नहीं कर पाते, उनके विकास प्रयासों की लागत बढ़ती जाती है और इस असफलता की कीमत वे मंद वृद्धि और घटती आमदनी के रूप में चुकाते हैं।
- **अगली पीढ़ी के लिए शिक्षा।** शिक्षित माताओं के

बच्चों के स्कूल जाने की सम्भावना कहीं अधिक बढ़ जाती है। महिला ने जितने अधिक वर्ष तक स्कूल में शिक्षा ली है, उसके बच्चों के लिए शिक्षा का लाभ लेने की सम्भावना उतनी ही बढ़ जाती है।

- **गुणात्मक प्रभाव।** शिक्षा के लाभकारी प्रभावों का दायरा सिर्फ कक्षा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह बालिका के जीवन के अधिकांश पहलुओं पर रचनात्मक असर डालता है। स्कूल जाने वाली लड़कियां खुद को एचआईवी/एड्स सहित कई बीमारियों से बचाने में बेहतर ढंग से समर्थ होती हैं, उनकी तस्करी या मज़दूर के रूप में उनके शोषण की सम्भावना कम होती है और उन्हें उतनी आसानी से हिंसा का शिकार भी नहीं बनाया जा सकता।

- **अधिक स्वस्थ परिवार।** विकासशील देशों से मिले विस्तृत प्रमाणों की समीक्षा से पता चलता है कि शिक्षित माताओं की संतानें अधिक स्वस्थ और अधिक सुपोषित होती हैं। माँ की शिक्षा के हर अतिरिक्त वर्ष के साथ–साथ पाँच वर्ष से छोटे बच्चों के लिए मृत्यु की दर 5 से 10 प्रतिशत के बीच घटती जाती है।

- **मातृ मौतों की संख्या में कमी।** स्कूल में पढ़ी–लिखी महिलाएं, स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग करने, अपना पोषण स्तर सुधारने और संतानों के जन्म के बीच अंतर बढ़ाने में अधिक समर्थ होती हैं। अनुमान है कि पढ़ाई के हर अतिरिक्त वर्ष के साथ–साथ प्रति एक हजार महिलाओं पर दो मातृ मौतों को रोका जा सकता है।

(देखें अध्याय 2, शिक्षित बालिकाएं, विकास के लिए अनूठी रचनात्मक शक्ति)

मुद्दा 5: दुनियाभर में लड़कों और लड़कियों के बीच अंतर

दुनिया के अधिकांश क्षेत्र सन् 2005 तक शिक्षा के मामले में लड़के और लड़कियों के बीच समानता का सहस्राब्दी विकास लक्ष्य हासिल करने के लिए सही रास्ते पर बढ़ रहे हैं, किन्तु कम से कम तीन क्षेत्रों में अगर कुछ और उपाय नहीं किए गए तो कुछ भी हासिल नहीं हो सकेगा। *(देखें आरेख)*

(देखें अध्याय 3, लड़कियों का छूटना, देशों का पिछड़ना)

कुल प्राइमरी स्कूल भर्ती/उपस्थिति दरें (1996–2002)

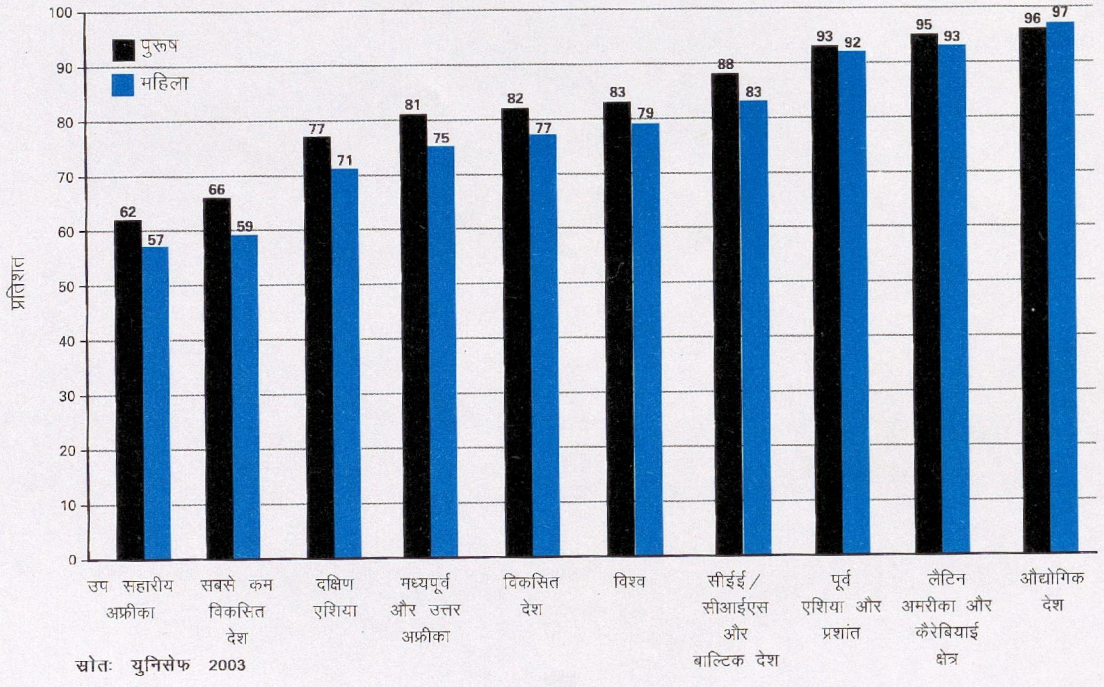

स्रोतः युनिसेफ 2003

मुद्दा 6: गरीबी

वैसे तो गरीब सामाजिक–आर्थिक समूहों के लड़के और लड़कियों दोनों के लिए ही शिक्षा से वंचित रहने की आशंका अधिक होती है, किन्तु लड़कियों पर गरीबी की मार सबसे अधिक होती है। वास्तव में लड़कियां दोहरी मार झेलती हैं: एक तो लड़की होने के कारण और दूसरी अपनी गरीबी के कारण।

लड़कियां जब स्कूल से बाहर रहती हैं तो अकसर वे *अदृश्य* होती हैं। ऐसी लड़कियों की संख्या या तो सच्चाई से कम बताई जाती है या उसकी बिलकुल सूचना ही नहीं दी जाती। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, अपेक्षाकृत ऊँची उपस्थिति और भर्ती दरों की आड़ में स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ चुकी लड़कियों की संख्या छिप जाती है। ऐसी लड़कियों की संख्या बढ़ रही है।

यह भी सम्भव है कि जिन स्थानों पर प्राइमरी स्कूल में लड़कियों की भर्ती और शिक्षा पूरी करने की दरें लड़कों की तुलना में ऊँची हैं, वहाँ लड़कियां माध्यमिक स्कूलों या उससे आगे न जा पाएं, नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाएं न दिखाई दें और योग्य महिलाओं की आमदनी पुरूषों की तुलना में कम रहे। शिक्षा के मामले में जिन देशों ने लड़कियों और लड़कों के बीच समानता हासिल कर ली है, उनके सामने एक नई चुनौती अपनी शिक्षित बालिकाओं के लिए सामाजिक अपेक्षाओं का दायरा बढ़ाने के तरीके तलाश करने की है।

(देखें अध्याय 2, शिक्षित बालिकाएं, विकास के लिए अनूठी रचनात्मक शक्ति और अध्याय 3, लड़कियों का छूटना, देशों का पिछड़ना)

मुद्दा 7: धन की कमी की भरपाई

औद्योगिक देशों और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं से अपेक्षाएं बहुत कम रही हैं, फिर भी वे शिक्षा में इतना निवेश करने में असफल रहे हैं, जिससे लड़कियां स्कूल जा सके और पढ़ाई पूरी कर सकें। विकासशील देशों के लिए मिलने वाली कुल सहायता वास्तव में 1990 के दशक में गिरी है और शिक्षा के लिए द्विपक्षीय सहायता राशि में तो और भी कमी आई है। शिक्षा में निवेश के बारे में एक नई सहमति, सन् 2002 में मैक्सिको में, मौन्टरी में विकास के लिए वित्तीय सहायता के बारे में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उभरती दिखाई दी, जहाँ सरकारों ने खासतौर पर बुनियादी शिक्षा के लिए समग्र सहायता और मदद बढ़ाने का संकल्प लिया। किन्तु दुनिया की सोच पर सुरक्षा का मुद्दा जिस तरह से हावी है, उसे देखते हुए ऐसा लगता है कि सहायता के कुछ संकल्प अधूरे रह जाएंगे। वास्तविकता यह है कि अंतर्राष्ट्रीय सहायता का नीचा स्तर समाधान की बजाए समस्या का ही एक अंग लगता है, किन्तु अगर सभी बच्चों को शिक्षा पाने का उनका अधिकार देना है तो इसे समस्या नहीं समाधान बनना होगा।

(देखें अध्याय 4, बालिकाओं की शिक्षा के गुणात्मक प्रभाव)

मुद्दा 8: बहु–क्षेत्रीय लाभ

एक–क्षेत्रीय कार्यक्रमों पर ध्यान देने की परम्परागत सोच ने विकास के सभी क्षेत्रों पर बालिका शिक्षा के प्रभावों को धुंधला कर दिया है। आज इस बात की नई समझ पैदा हुई है कि अंतर्राष्ट्रीय विकास समुदाय के सामने लड़कियों को शिक्षित करना सबसे तात्कालिक और आवश्यक कार्य क्यों हैं।

- **बच्चों के लिए सर्वोत्तम शुरूआत** – महिला को सशक्त, स्वस्थ और सुशिक्षित बनाना सिर्फ उसके लिए ही लाभकारी नहीं है, बल्कि उसके बच्चों के कल्याण पर भी नाटकीय प्रभाव डाल सकता है। महिला अगर बीमार, भूखी या दमित होगी तो वह अपने बच्चों का पालन–पोषण उतने ठीक ढंग से नहीं कर पाएगी।
- **आगे की स्कूली पढ़ाई के लिए तैयारी** – स्कूलपूर्व शिक्षा के कार्यक्रम बालिकाओं के लिए विशेष रूप से लाभकारी होते हैं: इनसे उन समुदायों में स्कूली पढ़ाई की आवश्यकता का अहसास पैदा हो जाता है, जहाँ लड़कियां अकसर घरेलू कामकाज और आमदनी देने वाले कामों में उलझी रहती हैं। समुदाय आधारित देखभाल लड़कियों को स्कूल में नियमित उपस्थिति का महत्व समझा सकती है; दादा–दादी या नाना–नानी के साथ हर दिन कुछ घंटे बिता लेने से भी लड़की को स्कूल भेजने में मदद मिल सकती है।
- **एचआईवी/एड्स से संघर्ष** – हर वर्ष 50 लाख से अधिक नए लोग एचआईवी/एड्स से संक्रमित हो रहे हैं। इनकी मार से सबसे अधिक देशों में मानव विकास के क्षेत्र में कड़ी मेहनत से प्राप्त लाभ तेज़ी

सुविधाओं, लड़कियों की आवश्यकताओं के प्रति सचेत पढ़ाई के तरीकों और स्कूल में हिंसामुक्त वातावरण का लाभ सभी बच्चों को मिलता है। शोध से पता चला है कि विशेषकर वंचित या हाशिए पर जी रहे समूहों के लड़कों को ऐसे बाल हितैषी स्कूलों से निरंतर लाभ होता है।

(देखें अध्याय 5, लड़कों का क्या होगा ? पृष्ठ 59–67)

मुद्दा 10: बालिका शिक्षा में निवेश

लड़कियों की शिक्षा में निवेश एक आदर्श निवेश है। यह सामाजिक विकास के अन्य क्षेत्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। स्वास्थ्य व्यवस्था पर बोझ कम करता है, गरीबी घटाता है और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करता है।

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004 में प्रस्तुत प्रमाणों से सिद्ध होता है कि सर्व शिक्षा की चुनौतियां सभी क्षेत्रों में विकास की चुनौतियां हैं:

- शिक्षा के लिए – बेशक; किन्तु साथ ही;
- वित्त के लिए, जिसमें धन आबंटित करना और स्कूलों को परिवारों के साधनों के भीतर लाना आवश्यक है;
- स्वास्थ्य के लिए, जिसमें पर्याप्त सेवाएं, जल और स्वच्छता प्रदान करना आवश्यक है;
- श्रम के लिए, जिसमें कामकाजी बच्चों के संरक्षण की व्यवस्था आवश्यक है;
- न्याय के लिए, जिसमें स्कूलों को सुरक्षित बनाना आवश्यक है;
- नियोजन के लिए, जिसमें स्थानीय समुदायों अथवा माता–पिता को उन सेवाओं की निगरानी करने में समर्थ बनाना आवश्यक है, जो उनके बच्चों के जीवित रहने और बड़े होने के लिए ज़रूरी हैं।

युनिसेफ समाज के हर स्तर के नेताओं का आह्वान करता है कि वे:

1. लड़कियों की शिक्षा को विकास के प्रयासों का आवश्यक अंग बनाएं, मानवाधिकार के मूल सिद्धांतों और लड़कियों के विशेष अधिकारों को संरक्षण दें।
2. व्यापक नागरिक शिक्षा अभियान चलाकर और प्रगति के लिए सरकारों को जवाबदेह ठहराकर, लड़कियों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर जनमत तैयार करें।
3. स्कूलों में किसी भी तरह की फीस लिए जाने की अनुमति न दें। सभी प्राइमरी स्कूलों में सभी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा मिलनी चाहिए।
4. शिक्षा के दायरे के बाहर और भीतर दोनों पहलुओं के बारे में सोचें, शिक्षा नीतियों को गरीबी कम करने की राष्ट्रीय योजनाओं से जोड़ें और प्रभावकारी कार्यक्रमों का दायरा बढ़ाएं।
5. स्कूलों को सामुदायिक विकास के केन्द्र के रूप में विकसित करें, विशेषकर संघर्ष और आपात स्थितियों में घिरे बच्चों के लिए ऐसा करना आवश्यक है।
6. निवेश, नीतियों और संस्थाओं से जुड़ी रणनीतियों को सेवा प्रदान करने वाली व्यवस्था और सैद्धांतिक ढाँचे से जोड़ें।
7. शिक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय धन का प्रवाह बढ़ाएं, सरकारी सहायता का 10 प्रतिशत बुनियादी शिक्षा के लिए प्रदान करें। औद्योगिक देश अपने सकल राष्ट्रीय उत्पाद का कम से कम 0.7 प्रतिशत विकास के रूप में अवश्य उपलब्ध करवाएं और कम से कम 0.15 प्रतिशत सबसे कम विकसित देशों को दिया जाए।

(देखें अध्याय 6, सही रास्ते)

सुविधाओं, लड़कियों की आवश्यकताओं के प्रति सचेत पढ़ाई के तरीकों और स्कूल में हिंसामुक्त वातावरण का लाभ सभी बच्चों को मिलता है। शोध से पता चला है कि विशेषकर वंचित या हाशिए पर जी रहे समूहों के लड़कों को ऐसे बाल हितैषी स्कूलों से निरंतर लाभ होता है।

(देखें अध्याय 5, लड़कों का क्या होगा ? पृष्ठ 59–67)

मुद्दा 10: बालिका शिक्षा में निवेश

लड़कियों की शिक्षा में निवेश एक आदर्श निवेश है। यह सामाजिक विकास के अन्य क्षेत्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। स्वास्थ्य व्यवस्था पर बोझ कम करता है, गरीबी घटाता है और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करता है।

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004 में प्रस्तुत प्रमाणों से सिद्ध होता है कि सर्व शिक्षा की चुनौतियां सभी क्षेत्रों में विकास की चुनौतियां हैं:

- शिक्षा के लिए – बेशक; किन्तु साथ ही;
- वित्त के लिए, जिसमें धन आबंटित करना और स्कूलों को परिवारों के साधनों के भीतर लाना आवश्यक है;
- स्वास्थ्य के लिए, जिसमें पर्याप्त सेवाएं, जल और स्वच्छता प्रदान करना आवश्यक है;
- श्रम के लिए, जिसमें कामकाजी बच्चों के संरक्षण की व्यवस्था आवश्यक है;
- न्याय के लिए, जिसमें स्कूलों को सुरक्षित बनाना आवश्यक है;
- नियोजन के लिए, जिसमें स्थानीय समुदायों अथवा माता–पिता को उन सेवाओं की निगरानी करने में समर्थ बनाना आवश्यक है, जो उनके बच्चों के जीवित रहने और बड़े होने के लिए ज़रूरी हैं।

युनिसेफ समाज के हर स्तर के नेताओं का आह्वान करता है कि वे:

1. लड़कियों की शिक्षा को विकास के प्रयासों का आवश्यक अंग बनाएं, मानवाधिकार के मूल सिद्धांतों और लड़कियों के विशेष अधिकारों को संरक्षण दें।
2. व्यापक नागरिक शिक्षा अभियान चलाकर और प्रगति के लिए सरकारों को जवाबदेह ठहराकर, लड़कियों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर जनमत तैयार करें।
3. स्कूलों में किसी भी तरह की फीस लिए जाने की अनुमति न दें। सभी प्राइमरी स्कूलों में सभी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा मिलनी चाहिए।
4. शिक्षा के दायरे के बाहर और भीतर दोनों पहलुओं के बारे में सोचें, शिक्षा नीतियों को गरीबी कम करने की राष्ट्रीय योजनाओं से जोड़ें और प्रभावकारी कार्यक्रमों का दायरा बढ़ाएं।
5. स्कूलों को सामुदायिक विकास के केन्द्र के रूप में विकसित करें, विशेषकर संघर्ष और आपात स्थितियों में घिरे बच्चों के लिए ऐसा करना आवश्यक है।
6. निवेश, नीतियों और संस्थाओं से जुड़ी रणनीतियों को सेवा प्रदान करने वाली व्यवस्था और सैद्धांतिक ढाँचे से जोड़ें।
7. शिक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय धन का प्रवाह बढ़ाएं, सरकारी सहायता का 10 प्रतिशत बुनियादी शिक्षा के लिए प्रदान करें। औद्योगिक देश अपने सकल राष्ट्रीय उत्पाद का कम से कम 0.7 प्रतिशत विकास के रूप में अवश्य उपलब्ध करवाएं और कम से कम 0.15 प्रतिशत सबसे कम विकसित देशों को दिया जाए।

(देखें अध्याय 6, सही रास्ते)

unicef

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004

प्रगति के सात कदम

स्कूली शिक्षा से वंचित 6.5 करोड़ लड़कियों पर दुनिया कभी उतना ध्यान नहीं देगी, जितना युद्ध पर देगी। फिर भी उनकी दुर्दशा किसी आपात स्थिति से कम नहीं है। समाज के सभी स्तर के नेताओं को यह व्यवहारिक और तात्कालिक कदम अवश्य उठाने चाहिए:

1. **लड़कियों की शिक्षा को विकास के प्रयासों का आवश्यक अंग बनाना,** यह सुनिश्चित करना कि आर्थिक विकास के कार्यक्रमों में मानवाधिकार सिद्धांतों को ध्यान में रखा जाए और सार्वजनिक सेवाओं तक लड़कियों की पहुँच अधिक सुरक्षित हो। अवसर की समानता के साथ–साथ परिणाम की समानता पर ध्यान देते हुए अपने जीवन को प्रभावित करने वाले फैसलों में हिस्सा लेने के लिए बच्चों और उनके परिवारों के अधिकार का सम्मान करना।

2. **लड़कियों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर जनमत तैयार करना,** ताकि समुदाय लड़कियों की स्कूली शिक्षा से वंचित किए जाने पर भी उतने ही चिंतित और उद्वेलित हों, जितना काम के दौरान लड़कियों और लड़कों के खुलेआम शोषण से होते हैं। सरकारों को नियमित रूप से उन लड़कियों की संख्या की सार्वजनिक सूचना देनी चाहिए, जो स्कूल नहीं जातीं और सफल बालिका शिक्षा परियोजनाओं की निगरानी करते हुए उनका विस्तार करना चाहिए। सरकारों को ऐसा शिक्षा कर या वस्तु सरचार्ज लगाने पर विचार करना चाहिए, जिसका उपयोग तब तक सिर्फ लड़कियों या लड़कों को स्कूल में पढ़ाने के लिए किया, जाए जब तक उनके बीच समानता की स्थिति न आ जाए।

3. **स्कूलों में किसी तरह की कोई फीस लेने की अनुमति न देना।** सभी प्राइमरी स्कूलों में सभी बच्चों को अनिवार्य रूप से मुफ्त शिक्षा दी जानी चाहिए और माता–पिता को यह चुनाव करने की पूरी छूट होनी चाहिए कि उनके बच्चे किस तरह की शिक्षा प्राप्त करें। प्राइमरी स्कूल स्तर पर सभी तरह की फीस और शुल्क तत्काल समाप्त कर दिए जाने चाहिए।

4. **शिक्षा के दायरे के बाहर और भीतर, दोनों पहलुओं पर सोचना,** शिक्षा नीतियों को गरीबी कम करने की राष्ट्रीय योजनाओं में समाहित करना और प्रभावकारी कार्यों का दायरा बढ़ाना। राष्ट्रों को भेदभाव समाप्त करने वाले कानूनों, बेहतर जल और स्वच्छता की व्यवस्था, एचआईवी/एड्स रोकथाम कार्यक्रमों, लड़कियों के प्रति संवेदनशील बचपन के प्रारम्भ में देखभाल के कार्यक्रमों और हिंसा कम करने तथा बच्चों को दुरूपयोग से बचाने के प्रयासों को प्रोत्साहन देकर लड़कियों को शिक्षित करने की दिशा में कदम उठाने चाहिए।

5. **स्कूलों को सामुदायिक विकास के केन्द्रों के रूप में स्थापित करना,** विशेषकर एचआईवी/एड्स के कारण अनाथ हुए बच्चों और संघर्षों तथा आपात स्थितियों में घिरे बच्चों के लिए। यह साबित हो चुका है कि स्कूल नई पीढ़ी को एचआईवी संक्रमण से बचाने के सबसे प्रभावकारी और लागत के हिसाब से लाभकारी साधन हैं। उन्हें इस बीमारी और बच्चों तथा युवाओं के जीवन के लिए अन्य खतरों का मुकाबला करने के प्रयासों का केन्द्र बनाया जाना चाहिए।

6. **राष्ट्रीय रणनीतियों को तीन स्तरों पर समन्वित करना:** निवेश, नीतियां और संस्थाएं; सेवा प्रदान करने की व्यवस्था; आर्थिक और मानवाधिकारपरक दृष्टिकोण का सैद्धांतिक ढाँचा।

7. **शिक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय धन का प्रवाह बढ़ाना,** सरकारी सहायता का 10 प्रतिशत हिस्सा बुनियादी शिक्षा के लिए देना और लड़कियों के लिए लाभकारी कार्यक्रमों को पहली प्राथमिकता बनाना। औद्योगिक देशों को सकल राष्ट्रीय उत्पाद का कम से कम 0.7 प्रतिशत हिस्सा सहायता के रूप में देने और कम से कम 0.15 प्रतिशत हिस्सा सबसे कम विकसित देशों के लिए देने का वायदा पूरा करना चाहिए।

दुनिया के बच्चों की स्थिति 2004

D

THEMATIC PACKET 'D'

UNICEF: दुनिया के बच्चों की स्थिति, 2004

प्रत्येक बच्चे के लिए
स्वास्थ्य, शिक्षा, समानता, संरक्षण
मानवता का उत्थान

unicef